स्त्री शिक्षा का समाज पर प्रभाव

डा0 परमानन्द त्रिपाठी

बी0 एड0 विभागाध्यक्ष
एल0एन0डी0 कॉलेज, मोतिहारी, बिहार
पिन कोड-845401

सारांश

शिक्षा मानव को एक अच्छा इंसान बनाती है। शिक्षा में (ज्ञान), उचित आचरण और तकनीकी दक्षता, शिक्षण और विद्या प्राप्ति आदि समाविश्ट है। इस प्रकार यह कौषलों, व्यापार या व्यवसायों एवं मानसिक, नैकित और सौन्दर्यविशयक के उत्कर्श पर केंद्रित है शिक्षा, समाज एक पीढी द्वारा अपने से निचली पीढी को अपने ज्ञान के हस्तांतरण का प्रयास है। इस विचार से शिक्षा एक संस्था के रुप में काम करती है, जो व्यक्ति विशेष को समाज से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है तथा समाज की संस्कृति की निरंतरता को बनाए रखती है। बच्चा शिक्षा द्वारा समाज के आधारभूत नियमों, व्यवस्थाओं, समाज के प्रतिमानों एवं मूल्यों को सीखता है। बच्चा समाज से तभी जुड़ पाता है जब वह उस समाज विशेष के इतिहास से अभिमुख होता है। शिक्षा व्यक्ति की अंतर्निहित क्षमता तथा उसके व्यक्तित्व का विकसित करने वाली प्रक्रिया उसे समाज में एक वयस्क की भूमिका निभाने के लिए समाजीकृत करती है तथा समाज के सदस्य एवं एक जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए व्यक्ति को आवष्यक ज्ञान तथा कौषल उपलब्ध कराती है। शिक्षा शब्द संस्कृत भाषा की षिक्ष धातू में अ प्रत्यय लगाने से बना है। किसी भी देश को पूर्ण रुप से विकसित होने के लिऐ वहां की महिलाओं का शिक्षित होना जरुरी है। यह एक तरह से उस दवाई की भांति है जो मरीज को ठीक होने में मदद करती है और उसे फिर से सेहतमंद बनने में मदद करती है। महिला शिक्षा एक बहुत बड़ा मुद्दा है भारत को आर्थिक रुप से तथा सामाजिक रुप से विकसित बनाने में। शिक्षित महिला उस तरह का औजार है जो भारतीय समाज पर और अपने परिवार पर अपने हुनर तथा ज्ञान से सकारात्मक प्रभाव डालती है। देश के आर्थिक और सामाजिक विकास के पीछे शिक्षित महिला का अमूल्य योगदान होता है। कई बार ऐसा देखा जाता है कि अनपढ महिला का जल्द ही विवाह कर दिया जाता है और वे जल्दी ही बच्चों को जन्म दे देती है। शिक्षित महिला ऐसा कदम सोच समझ कर उठा सकती है जिससे देश की बढती हुई जनसंख्या पर भी रोकथाम लगाई जा सकती है।

पौराणिक काल के भारत में महिलाओं के लिए शिक्षा का उचित प्रबंध था परन्तु मध्यकालीन युग के आते आते महिलाओं पर कई तरह की पाबंदिया लगा दी गई थी। हालाकि अगर हम आज की बात करे तो लोग महिलाओं की शिक्षा को लेकर बहुत जागरुक हो चुके है और यह अच्छी तरह समझते है कि महिला और पुरुष दोनो मिल कर ही देश को हर क्षेत्र में पूर्ण रुप से विकसित कर सकते है।

महिलाओं को भी पुरुषों की तरह शिक्षा संबधी गतिविधियों में बराबरी का मौका दिया जाना चाहिए। उन्हे शिक्षा से जुड़ी किसी भी तरह की कार्यवाही से दूर रखना क्रूरता के समान है। हमारे देश की आधी जनसंख्या का प्रतिनिधित्व महिलाएं करती है। अगर महिलाएं अपनी शिक्षा पूरी नहीं कर पायी तो इसका मतलब है की हमारे देश का विकास भी अधूरा है जो देश को पिछडेपन की ओर ले जायेगा। महिलाओं के शिक्षित होने से समाज और देश में विकास भी तेजी से हो पायेगा। महिलाओं के लिए शिक्षा के महत्व को व्यापक स्तर पर फैलाने के लिए पूरे देश का विकास कर सकती है। महिला शिक्षा की दर कम दर कम होने की ही वजह

स्व प्रमाणित
परमानन्द त्रिपाठी

से जनसंख्या के मामले में हमारा देश पूरे विश्व में दूसरे नंबर पर आता है। अगर महिला खुद शिक्षित होगी तो देश का आने वाला भविष्य भी शिक्षित होगा। महिला शिक्षा मध्यकालीन भारत में बहुत बड़ा मुद्दा था हालांकि आज यह मसला काफी हद तक सुलझ चुका है। भारत में अब महिला शिक्षा को पुरुष की शिक्षा की ही तरह अहमियत दी जाती है ताकि महिलाएं भी सामाजिक और आर्थिक स्तर पर सकारात्मक बदलाव ला सकें पुराने जमाने में महिलाओं को घर से बाहर निकलने की इजाजत नहीं थी। शिक्षा के नाम पर वे सिर्फ घरेलू कामकाजों तक ही सीमित थी।

राजा राममोहन राय और ईश्वरचंद्र विद्यासागर कुछ ऐसे समाज सुधारक थे जिन्होने ब्रिटिष राज के दौरान महिलाओं के विकास के काफी सराहनीय कार्य किया था। महिला तथा पुरुष दोनो मिल कर देश की आधी आधी जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करते है। वे एक सिक्के के दो पहलू के समान है तो इस हिसाब से महिला तथा पुरुष दोनो ही देश के विकास में बराबरी के हकदार है। महिलाओं के बिना समाज की कल्पना नहीं की जा सकती क्योकि आने वाले वंष की जन्मदाता वे ही है। अगर महिलाएं अच्छी तरह से शिक्षित होंगी तो ही वे भविष्य में जन्म लेने वाली पीढी को शिक्षा दे पाएंगी जिससे समाज और देश प्रगति कर पाएगा।

भारत में महिला सुरक्ष के लाभः

भारत की उन्नति के लिए महिलाओं का शिक्षित होना बहुत जरुरी है क्योकि अपने बच्चों की पहली शिक्षक माँ ही होती है जो उन्हे जीवन की अच्छाईयों औरा बुराइयों से अवगत कराती है। अगर नारी शिक्षा को नजरंदाज किया गया तो देश के भविष्य के लिए यह किसी खतरे से कम नहीं होगा। एक अनपढ महिला में वो काबिलियत नहीं होती जिससे वह अपने परिवार, बच्चों का सही ख्याल रख सके। इस कारण आने वाली पीढी कमजोर हो जाएगी। हम महिला साक्षरता के सारे लाभ की गिनती तो नहीं कर सकते पर इतना जरुर कर सकते है की एक शिक्षित महिला अपने परिवार और बच्चों की जिम्मेदारी को अच्छे बुरे का ज्ञान दे सकती है, सामाजिक तथा आर्थिक कार्य करके देश की प्रगति में अपना योगदान दे सकती है।

एक पुरुष को शिक्षित करके हम सिर्फ एक ही व्यक्ति तक शिक्षा पहुँचा पाएगे पर एक महिला को शिक्षित करके हम पूरे देश तक शिक्षा को पहुँचा पाएंगे। महिला साक्षरता की कमी देश को कमजोर बनाती है। इसलिए यह बहुत जरुरी है कि महिलाओं को उनकी शिक्षा का हक दिया जाए और उन्हे किसी भी तरह से पुरुषों कम न समझा जाए।

पौराणिक युग से लेकर आजादी के बाद के समय तक महिला साक्षरता को लेकर किये गये प्रयासों में बहुत प्रगति हुई है। हालांकि अभी यह कार्य संतुष्टि के स्तर तक नहीं पहुँचा है। अभी भी इस दिशा में काफी काम करना बाकी है। भारत के विश्व में बाकी देशों से पिछडनें के पीछे महिला साक्षरता की कमी का ही होना है। भारत में महिला साक्षरता को लेकर गंभीरता इसलिए कम है क्योंकि बहुत पहले समाज में महिलाओं पर तरह-तरह की पाबंदियां थोप दी गई थी। इन पाबंदियों का जल्द ही हटाना बेहद जरुरी है। इन प्रतिबंधों को हटाने के लिउ हमें महिला शिक्षा को लेकर व्यापक स्तर पर जागरुकता फैलानी होगी और महिलाओं को अपने अधिकारों के प्रति प्रेरित करना होगा जिससे वे आगे आकर समाज और देश को बदलने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सके।

महिला शिक्षा की बेहतरी के लिए निम्नलिखित योजनायें भारत सरकार द्वारा चलाई जा रही है

* सर्व शिक्षा अभियान
* इंदिरा महिला योजना
* बालिका समृद्धि योजना
* महिला समृद्धि कोश
* रोजगार तथा आमदनी हेतु प्रषिक्षण केन्द्र
* महिलाओं तथा लडकियों की प्रगति के लिए विभिन्न कार्यक्रम

भारत में महिला शिक्षा को प्रभावित करने वाले निम्नलिखित कारण हैः

* ***कुपोशण तथा भरपेट खाना न मिलना***
* **नाबालिंग उम्र में यौन उत्पीड़न**

* माता-पिता की खराब आर्थिक स्थिति
* कई तरह की सामाजिक पाबंदी
* घर में माता-पिता या सास-ससुर का कहना मानने का दबाव
* ऊंची शिक्षा हासिल करने की अनुमति ना होना
* बचपन में संक्रमण रोग से लड़ने की प्रयाप्त शक्ति की कमी

सर्व शिक्षा अभियान क्या है

सर्व शिक्षा अभियान एक राश्ट्रीय योजना है जिसे भारत सरकार द्वारा चलाया जा रहा है इसका उदेश्य 8 साल तक 6 से 14 वर्ष के बच्चो को उत्तम शिक्षा देने का है। पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी द्वारा शुरू की गयी इस योजना का मुख्य लक्ष्य है।

. 2002 तक देश के सभी जिलो में शिक्षा को पहूँचाना।
. 2003 तक सभी बच्चो का स्कूल में दाखिला करवाना।
. 2007 तक सभी बच्चों की न्यूनतम 5 साल की शिक्षा अनिवार्य करना।
. 2010 तक सभी बच्चें अपनी 8 साल की शिक्षा पूरी कर चूके हो इसको सूनिष्चित करना।

निष्कर्ष

आज के समय में भारत महिला साक्षरता के मामले में लगातार प्रगति कर रहा है। हिंन्दुस्तान के इतिहास में भी बहादूर महिलाओं जिक्र किया गया है। मीराबाई, दुर्गावती, अहिल्याबाई जैसी कुछ मषहूर महिलाओं के साथ.साथ वेदों के समय की महिला दर्षनषास्त्री गार्गी ,विस्वबरा ,मैत्रयी आदि का भी उदाहरण इतिहास का पन्नो में दर्ज है। ये सब महिलाएं प्रेरणा का स्त्रोत थी। समाज और देश के लिए दिए गयें उनके योगदान को हम कभी नहीं भूल सकते। भारत में महिला साक्षरता नए जमाने की अहम जरूरत है। महिलाओं के शिक्षित हुए बिना हम देश के उज्जवल भविष्य की कल्पना भी नहीं कर सकते। परिवार , समान और देश की उन्नति में महिलाओं की भूमिका बहूत महत्वपूर्ण है। भारत के लोकतंत्र को सफल बनाने का एकमात्र रास्ता यही है। की महिलाओं तथा पुरुषों को शिक्षा हासिल करने के लिए बराबरी को हक दिया जाए। शिक्षित महिलाएं ही देश, समाज और परिवार में खुषहाली ला सकती हैं यह कथन बिलकुल सत्य है। की एक आदमी सिर्फ एक व्यक्ति को ही शिक्षित कर सकता पर एक महिला पूरे समाज को शिक्षित कर सकती है। जिससे पूरे देश को शिक्षित किया जा सकता है।

आज महिला षिक्षा के महत्व को पहचान बहुत आवष्यक है। क्योंकि वे अपने बच्चो की पहली शिक्षक है जो आगे जाकर देश के निर्माण को एक नई पहचान देंगें। किसी भी बच्चे का भविष्य उसकी माँ द्वारा दिए गए प्यार और परवरिष पर निर्भर करता है। जो एक महिला ही कर सकती है। हर बच्चा अपनी जिन्दगी की पहली सीख अपनी माँ से हि हासिल करता है। इसलिए माँ का शिक्षित होना बेहद जरूरी है। जिससे वह अपने बच्चे में गुण डाल सकें जो उसके जीवन को सही दिशा दे सकें। शिक्षित महिलाएं सिर्फ अपने बच्चे ही नहीं बल्कि उनके आसपास और कई लोगों की जिंदगी को बदल सकती है। जो देश को विकसित करनें में महत्वपूर्ण किरदार अदा कर सकतै है।

एक महिला अपनें जीवन में माँ,बेटी, बहन ,पत्नी जैसे कई रिश्तों को निभाती है। किसी भी रिष्ते में बंधने से पहले वह महिला देश की आजाद नागरिक है तथा वह उन सब अधिकारों की हकदार है जो पुरुष को मिले हुए है। उन्हें जपनी इच्छा अनुसार शिक्षा ग्रहण करने को हक है जिससे वे अपने मनपसंद क्षेत्र में कार्य कर सके। महिलाओं को अपनें पैरों पर खड़ा करने तथा आत्मनिर्भर बनाने में शिक्षा सहायता करती है। शिक्षा न सिर्फ महिलाओं को अपने पैरो पर खड़ा करनें तथा आत्मनिर्भर बनाने में शिक्षा सहायता करती है। शिक्षा न सिर्फ महिलाओं का समाज में उच्च शिक्षा स्तर करती है। बल्कि महिलाओं के प्रति समाज की उस संकीर्ण सोच जिसमें उन्हें माँ बाप पर बोझ की तरह देखा जाता था ,को भी खत्म करती है।

सन्दर्भ

* षिक्षण ख्र मरिअम वेबस्टर ऑनलाइन शब्दकोश से परिभाषा
- Mark "Levels of Teaching".Learning Classes online .
- LCO."Shikshan ka safar ". Learning Classes online .
* शिक्षा विकासपीडिया
* बहु प्रतिभा सिद्धांत-क्या है। आपके सीखने की शैली
* ज्ञानगंगा
* राजस्थान शिक्षा राजस्थान के शिक्षा संबंधी समाचारों को समर्पित बेवसाइट